



वनटांगिया समुदाय: हाशिये से मुख्य धारा की ओर

तुलसी वर्मा¹, डॉ. सुषमा पाण्डेय², डॉ. सुधीर नारायण सिंह³, शिवानी सिंह⁴

¹ शोध छात्रा (अंग्रेजी), मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, ई-मेल: 2026138105@mmmut.ac.in, ORCID:0009-0005-6616-7633

² सहायक आचार्य (अंग्रेजी), मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, ई-मेल: sphssd@mmmut.ac.in, ORCID:0009-0003-0847-6855

³ सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी), मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, ई-मेल: hodhmsd@mmmut.ac.in, ORCID:0009-0001-2172-7642

⁴ शोध छात्रा (अंग्रेजी), मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, ई-मेल: 2026138104@mmmut.ac.in, ORCID:0009-0007-5731-3752

शोध पत्र सार

वनटांगिया समुदाय उत्तर प्रदेश का एक वन-निवासी समुदाय है जिसका सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन लंबे समय से गोरखपुर, महाराजगंज तथा आस-पास के जंगलों से गहराई से जुड़ा रहा है। यह समुदाय लंबे समय तक शिक्षा, स्वास्थ्य, पीने योग्य पानी, रोजगार इत्यादि से वंचित रहा है। यहाँ तक कि ये लोग मतदान के अधिकार तथा अन्य अनेक सरकारी सुविधाओं एवं योजनाओं से भी वंचित रहे हैं। औपनिवेशिक काल से लेकर वर्तमान समय तक यह समुदाय मुख्य रूप से वन क्षेत्रों पर ही निर्भर रहा है। वर्ष 2017 के बाद से इनके जीवन में सरकार की ओर से अनेक सुधार किये गये। सरकारी योजनाओं का लाभ इन तक पहुँचाया गया। सरकार के प्रयास से इन्हें पक्के मकान, बिजली, स्वच्छ पानी, शिक्षा, रोजगार आदि जैसी मूलभूत सुविधाएं प्राप्त हुईं। परंतु आज भी इस समुदाय के साथ सामाजिक, आर्थिक, और **शैक्षणिक** समस्याएं बनी हुई हैं। यह शोध-पत्र वनटांगिया समुदाय के इतिहास, संस्कृति, पारंपरिक-पहचान, आजीविका और और सामाजिक स्थिति का अध्ययन करता है। साथ ही यह शोध-पत्र इस बात का भी विश्लेषण विवेचनात्मक विमर्श करता है कि वर्तमान समय में विकास-योजनाओं ने इस समुदाय के जीवन में किस प्रकार के परिवर्तन उत्पन्न किये हैं तथा यह भी दर्शाता है कि सतत् विकास की संकल्पना के माध्यम से हम इनके जीवन शैली में सुधार कैसे ला सकते हैं। इसका दायरा वनटांगिया समुदाय में प्रचलित प्रथाओं, परंपराओं, जीवन शैली एवं विकास के माध्यम से मुख्य धारा की ओर प्रगतिशील एवं विकासोन्मुख उन्नयन का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करना है।

कुंजी शब्द: वनटांगिया समुदाय, सतत् - विकास, पर्यावरण, सामाजिक न्याय, सामाजिक समावेशन, जनजातीय अनुसंधान, संस्कृति।

वनटांगिया समुदाय: एक परिचय

वनटांगिया समुदाय की उत्पत्ति 19वीं सदी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई है। वनटांगिया शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'वन', जिसका अर्थ है जंगल, और 'टांगिया', जो 'टोंग्या' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित कृषि या ऐसे कृषि कार्य से जिसमें वन - भूमि पर अस्थायी रूप से खेती की जाती है। 'ब्रिटिश शासन के दौरान वनटांगिया समुदाय के लोगों को उत्तर प्रदेश, असम और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में वन लगाने और उनकी देखभाल करने के लिए लाया गया था। उस समय ब्रिटिश शासन ने रेलवे निर्माण के कारण जंगलों को जो हानि हुई थी उसकी क्षतिपूर्ति के लिए तथा जंगलों को दोबारा जीवित करने के लिए इस वन-निवासी समुदाय को जंगल लगाने का काम सौंपा था। जब रेलवे का निर्माण हो रहा था तो उस समय साखू के पेड़ बड़ी संख्या में काटे गये थे इसकी भरपाई के लिए अंग्रेज सरकार ने साखू वृक्ष का रोपण और उनकी देखभाल करने के लिए भूमिहीनों और मजदूरों को जंगल में बसाया। साखू के जंगल लगाने के लिए उस समय का वर्मा देश कृषि की 'टांगिया' विधि का इस्तेमाल किया करता



गोरखपुर में वनटांगिया



पौधशाला के माध्यम से जीविकोपार्जन

था इसलिए वन में रहकर इस कार्य को करने वाले 'वनटांगिया' कहलाये। उत्तर प्रदेश में लगभग 23 जंगलयुक्त गाँव हैं जो कि गोरखपुर तथा महाराजगंज के जिले में देखे जाते हैं। यह अध्ययन इन्हीं 23 गाँवों से सम्बन्धित है जिसमें से 18 गाँव महाराजगंज के अन्तर्गत आते हैं और 5 गाँव गोरखपुर के आन्तर्गत आते हैं। इन्हीं गाँवों में वनटांगिया समुदाय निवास करता है। यह पूर्वांचल के सबसे पिछड़े समुदायों में से एक है। यह समुदाय गोरखपुर के कुशमी जंगल के पाँच जंगली इलाकों जैसे तिनकोनिया नंबर तीन, रजही खाले टोला, रजही नर्सरी, आमबाग नर्सरी व चिलबिलवा में रहते हैं। इनकी ये पाँच बस्तियां वर्ष 1918 में बसी थीं।

1947 में हमारा देश आजाद हुआ लेकिन वनटांगिया समुदाय के पास तब भी न ही मौलिक अधिकार थे न ही जमीन, न तो गाँव में बिजली थी, न ही कोई विद्यालय। किसी सरकारी योजना की सुविधा भी नहीं थी। जंगल बसाने वाले इस समुदाय के पास न ही खेती के लिये कोई जमीन थी न ही झोपड़ी के अलावा उन जंगलों में कुछ और बनाने की इजाजत। यह समुदाय अपना जीवनयापन लकड़ियों तथा पेड़ के पत्तों को बेचकर एवं मजदूरी करके करता था। इनके पास आय का कोई और साधन भी नहीं था और तो और इनके पास कोई प्रमाण भी नहीं था जिसके आधार पर ये लोग विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में अपने नागरिक होने का दावा कर पाते। समय-समय पर वन विभाग की तरफ से वनों से निकाले जाने का भय अलग सताता रहता था। उत्तर प्रदेश में लगभग 40000 से 50000 लोग शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से दूर जंगल के पास संयुक्त रूप से गाँवों में रहते हैं। हालांकि इस समुदाय का जंगल में रहने का इतिहास पुराना है, उनकी अपनी एक विरासत भी है पर अधिकांश राज्यों में इसे आधिकारिक तौर पर अनुसूचित जनजाति (ST) के रूप



वनटांगिया गाँव आम बाग का प्रवेश द्वार

मे मान्यता प्राप्त नहीं है। ये लोग विभिन्न जातियों (जैसे निषाद, मौर्य, दलित आदि) से ताल्लुक रखते हैं जो जंगल बसाने के लिए पीढ़ियों से गोरखपुर और महाराजगंज के जंगलों में रह रहे हैं। स्वतंत्रता के एक लंबे अंतराल के बाद जब उत्तर प्रदेश में मुख्य मंत्री के रूप में श्री योगी आदित्यनाथ जी ने शपथ ग्रहण किया तब उन्होंने वनटांगिया समुदाय के गावों को आधिकारिक रूप से गोद लिया। इसके बाद से विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं नीतियों के माध्यम से वनटांगिया समुदाय के जीवनशैली में सुधार लाने का प्रयास आरंभ हुआ। शिक्षा, आवास, सड़क, स्वास्थ्य, बिजली तथा सामाजिक सुरक्षा जैसी सुविधाओं के प्रदान किये जाने के बाद से इनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं। वनटांगिया समुदाय को **UNSDG** के दृष्टिकोण से भी देखना आवश्यक है। UNSDG के लक्ष्य नंबर 1 से 6 के अन्तर्गत जीरो हंगर, गुड हेल्थ, क्वालिटी एजुकेशन, जेन्डर एक्विटी की बात कही जाती है, जिसके तहत वनटांगिया समुदाय को गरीबी, स्वास्थ्य, पीने योग्य जल, पर्यावरण की सुरक्षा, शिक्षा जैसे अहम मुद्दों के साथ जोड़ के देखा जाए तो इस समुदाय की कठिनाइयों का **अध्ययन सफलता पूर्वक किया जा सकता है तथा** उनकी स्थितियों को बेहतर बनाया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. वनटांगिया समुदाय को वर्तमान में कौन-कौन सी परेशानियों जैसे शैक्षिक, आर्थिक, रोजगार एवं विकास संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनका विश्लेषण।
2. समुदाय के इतिहास को समझना तथा उनकी संस्कृति एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन।
3. वनटांगिया समुदाय के सतत् और समावेशी विकास हेतु क्या-क्या प्रयास किये गये हैं तथा अन्य क्या प्रयास किये जा सकते हैं उन संभावनाओं को सामने लाना साथ ही सरकारी योजनाओं के बाद क्या-क्या बदलाव आए हैं उन्हें समझना।
4. समुदाय की स्थिति को सतत् विकास के संबंध में समझना।

वनटांगिया समुदाय: भौगोलिक स्थिति

वनटांगिया समुदाय का अस्तित्व और पहचान पूरी तरह से कुसुमी जंगल से जुड़ा हुआ है जो कि करीब 3207.10 हेक्टेयर यानि करीब 32.07 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यह जंगल चारों ओर से साखू के पेड़ों से घिरा हुआ है। यह केवल जंगल ही नहीं बल्कि वनटांगिया समुदाय के संघर्ष, अस्तित्व और संस्कृति की कहानी है, और अगर इतिहास की बात करें तो इस समुदाय का संबंध जंगल की मिट्टी, और इसके विस्तार से सीधा जुड़ा हुआ है। सन् 1920 में रेलवे निर्माण के कारण जब पेड़ों को भारी मात्रा में काटा गया तब उसकी भरपाई के लिए तथा दुबारा उस स्थान को जंगल का रूप देने के लिए अंग्रेजों ने वर्मा से वनटांगिया समुदाय के लोगों को बुलाया। उन्हें एक खाली



वनटांगिया क्षेत्र का प्राकृतिक एवं कृषि परिवेश

जगह दे दी गई और वृक्ष रोपड़ करने के लिए कहा गया। तब वनटांगिया समुदाय ने साखू के पेड़ लगाने शुरू किए और जैसे ही एक जगह समाप्त हो जाती वो दूसरी खाली जमीन पर काम करने लगते। ऐसा करते करते यह जंगल कुल 3207.10 हेक्टेयर में फैल गया अब कुसुमी जंगल वनटांगिया समुदाय के नाम से पहचाना जाता है। वर्तमान समय की बात करें तो कुसुमी जंगल के आस-पास इनके प्रसिद्ध गाँव स्थित है जैसे तिरकोनिया नंबर तीन, रजही खाले टोला, रजही नर्सरी, आमबाग नर्सरी व चिलबिलवा।

इनके पाँच गाँव गोरखपुर जिले में है तथा अठारह गाँव महाराजगंज में स्थित है। मुख्यमंत्री महंत योगी श्री आदित्यनाथ द्वारा 2017 में वनटांगिया बस्ती को राजस्व गाँव घोषित किया गया।

आधुनिक आर्थिक- सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वनटांगिया के लोग

आधुनिक आर्थिक - सामाजिक परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक रूप से वनटांगिया समुदाय का जीवन 'अंधेरे से उजाले की ओर' बढ़ने की एक अद्भुत कहानी है। अगस्त 1947 में मिली आजादी के बावजूद भी यह समुदाय लंबे समय तक विकास के मुख्यधारा से कोसों दूर था। इनके पास ना तो मतदान करने का अधिकार था ना ही कोई पहचान पत्र। इन्हें झोपड़ी के अलावा कुछ और बनाने की अनुमति भी नहीं थी और इन कठिन परिस्थितियों का उन्होंने 70 साल तक सामना किया। नव भारत टाइम्स में 1 जनवरी 2018 को प्रकाशित समाचार के संदर्भानुसार योगी आदित्यनाथ जी ने गोरखपुर क्षेत्र से निर्वाचित होने के बाद उन पर ध्यान दिया और 1 जनवरी 2017 को वनटांगिया समुदाय के 18 गांवों को राजस्व गाँव घोषित किया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के द्वारा पहली बार इन्हें भारत देश के नागरिकों के समान समस्त अधिकार दिए गये। पनियारा ब्लॉक के तहत चंदनचाफी गाँव में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री जी ने 3779 वनटांगिया परिवारों को भूमि के पट्टे प्रदान किये। उन्हें मुख्यधारा में लाने के लिए उन्हें सड़क, पानी, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा और मकान जैसे सुविधाएं प्रदान करने की घोषणा की। उसी दिन उन्होंने इन गांवों में आंगनवाड़ी केंद्र की आधारशीला रखी साथ ही वहाँ प्राथमिक विद्यालय और जूनियर हाई स्कूल खोलने का प्रस्ताव लाने की घोषणा की।



प्राकृतिक स्रोतों पर आधारित जन जीवन

कच्ची पगडंडियों से इंटरलॉकिंग तथा आर.सी.सी तक का सफर

औपनिवेशिक काल से लेकर आजादी के बाद के 70 साल तक वनटांगिया बस्तियां घने जंगल के बीच केवल कच्ची पगडंडी और मिट्टी के रास्तों से जुड़ी हुई थी। इन बस्तियों में साइकिल से जाना भी मुश्किल था। वहाँ के लोगों को पक्का रास्ता न होने की वजह से बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। बारिश में तो मुश्किलें और भी बढ़ जाती थीं। जब बारिश का पानी मिट्टी के रोड पर पड़ता था तो पूरी मिट्टी दलदली हो जाती जिससे वहाँ के लोगों को रास्ता चलना भी मुश्किल हो जाता था। वे जंगल के बाहर की दुनिया से कट जाते थे।



कच्ची पगडंडी से पक्की सड़क की ओर



वनटांगिया क्षेत्र की पक्की सड़क

ना तो वे अपनी आजीविका के

लिए कोई काम करने जंगल से बाहर जा पाते थे ना ही आपातकालीन स्थिति में कोई चिकित्सकीय सहयोग लेने हेतु अस्पताल ही पहुँच पाते थे। जंगल में अनेक प्रकार के जहरीले सर्पों की वजह से तथा अन्य कारणों से उनके जीवन पर भयानक खतरा मंडराता रहता था। वन विभाग उन्हें अनुमति नहीं देता था कि वे पक्की सड़क बनवाने का बिल पास करा पाएँ। जब उनके गांवों को मुख्यमंत्री द्वारा राजस्व ग्राम घोषित किया गया तब वहाँ पक्की सड़कें बन पायीं और उस बस्ती के लोगों ने थोड़ी सुकून की सांस ली कि अब उन्हें इतनी तकलीफों का सामना नहीं करना होगा और वे आसानी से शहर आ-जा सकते हैं। पहले जहाँ

चलना भी मुश्किल था वहाँ अब दोपहिया अथवा चारपहिया वाहन भी आसानी से आ-जा सकते हैं। एम्बुलेंस, स्कूल- बस अथवा कोई भी वाहन अब उनकी आवश्यकता के समय वहाँ आ जा सकते हैं। इस प्रकार वे जीवन की मुख्य धारा से जुड़ने में समर्थ हो सके हैं। वर्तमान में उनके निवास स्थल वाले जंगल का मुख्य द्वार नेशनल हाइवे 27 (NH 27) की ओर खुला हुआ है जिससे कि ये बाहरी दुनिया से जुड़ने समर्थ हो सके हैं। सरकारी योजनाओं एवं कार्यों की वजह से इनका लगातार विकास संभव हो रहा है।

राजस्व ग्राम चयनोपरांत वनटांगिया जीवन में परिवर्तन

वनटांगिया समुदाय को राजस्व ग्राम घोषित करने के उपरांत उनके जीवन में बहुत से परिवर्तन हुए। सबसे बड़ा परिवर्तन उनके निवास से संबंधित है। 2017 से पहले वो आस्थाई झुग्गी-झोपडियों में रहते थे तथा उनका जीवन एक घुमंतू जीवन था। उनके पास कोई स्थायी निवास नहीं था, लेकिन राजस्व ग्राम घोषित होने के उपरांत उनके जीवन में एक नई सुबह का आगमन हुआ। उन्हें सरकार द्वारा जमीन के पट्टे और आवास की सुविधा मिली और पक्के मकान में रहने का अवसर भी मिला साथ ही उनके पहचान- पत्र भी बनवाए गये। उन्हें आधार कार्ड मुहैया कराये गये तथा इन्हें बहुत सारी सरकारी योजनाओं से जोड़ा गया जैसे- उज्ज्वला योजना, पीएम किसान सम्मान निधि, आवास योजना, वृद्धावस्था पेंशन योजना, विधवा पेंशन योजना इत्यादि। 2017 के बाद से इन्हें राशन कार्ड का लाभ मिलना शुरू हुआ।



सरकारी आवास योजना के अंतर्गत पक्का आवास

रेशम उत्पादन: आजीविका स्रोत

लंबे समय तक वन में रहने के कारण इस समुदाय का जीवन प्रकृति और वन-आधारित संसाधनों से जुड़ा रहा है। अपनी आजीविका चलाने के लिए इस समुदाय के लोग रेशम के कीड़ों का पालन भी करते हैं। रेशम के कीट पालने की प्रक्रिया में सरकार इन्हे हर संभव मदद करती है। सरकार इस समुदाय के लोगों को रेशम – कीट के अंडे उपलब्ध कराती है। इन अंडों की उस रेशम फार्म पर सरकार द्वारा नियुक्त कर्मचारी देखभाल करते हैं तथा कुछ समय बाद जब इनसे रेशम – कीट निकलते हैं तब उनकी सुरक्षा एवं पालन की जिम्मेदारी भी इन्हीं कर्मचारियों की होती है। इन्हें सहतूत के पत्ते खिला कर पाला जाता है। जब ये कीट १० दिन के हो जाते हैं तब इन्हे गाँव की महिलाओं में वितरित कर दिया जाता है। ये महिलायें इन कीटों को १५ दिन तक अपने पास रख कर इनका पालन-पोषण करती हैं तथा इन्हें सहतूत के पेड़ों पर पालती हैं। १५ दिनों के बाद ककून का निर्माण होता है, इन्हीं ककून से महीन रेशम प्राप्त होता है। इन रेशम –कीटों का जीवन – चक्र २५ से २६ दिन का होता है। २४ या २५ दिन का चक्र पूरा होने पर ये महिलायें इन रेशम –कीटों को वापस फार्म पर बेच देती हैं तथा उसके बदले में पैसे प्राप्त करती हैं। रेशम –फार्म पर इन कीटों से रेशम प्राप्त किया जाता है। १ ककून से लगभग 900 मीटर का रेशम का धागा प्राप्त होता है। इन क्षेत्रों से प्राप्त होने वाले सिल्क को ‘मलवरी सिल्क’ कहा जाता है। गोरखपुर क्षेत्र के वनटांगिया ग्राम में रेशम उत्पादन वनटांगिया समुदाय के रोजगार का एक महत्वपूर्ण साधन है जिससे वे अपने परिवार की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। सिल्क या रेशम मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं जैसे मूंगा सिल्क, एरी सिल्क, तसर सिल्क और मलवरी सिल्क। आमबाग गाँव में रेशम के कीड़े का पालन-पोषण कुशीनगर के इंद्रजीत जी करीब 30-35 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। ये स्वयं वनटांगिया समुदाय से संबंधित नहीं हैं परंतु सरकार की ओर से नियुक्त संविदा कर्मचारी के रूप में वो रेशम कीटों का पालन कर रहे हैं तथा उससे जुड़े कार्यों की देखभाल कर रहे हैं। उनका दीर्घ अनुभव इस पारंपरिक आजीविका को समझने और आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रेशम का उपयोग हम वस्त्र निर्माण के साथ-

साथ चिकित्सकीय कार्य में भी करते हैं। ऑपरेशन के समय जो गलने वाले टांके लगाये जाते हैं उनमें इन्हीं रेशम के धागों का प्रयोग होता है।

रेशम उत्पादन का फार्म	शोधकर्ता द्वारा क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान लिया गया चित्र	रेशम के धागों का चित्र
१	२	३

वनटांगिया समुदाय का सामाजिक जीवन :

लंबे समय तक वन में रहने के कारण इस समुदाय के जीवन में वनों का अत्यधिक महत्व है। समुदाय की ही ऊषा नामक एक महिला से जब हमलोगों ने बात – चीत की तो उसने बताया कि “ हम लोग प्रकृति की उपासना करते हैं तथा भोले नाथ को अपना आराध्य मानते हैं।” साथ ही उसने बताया कि बुढ़िया-माई की पूजा का उनके जीवन में विशेष महत्व है। वे बुढ़िया माई को बड़ी श्रद्धा से पूजते हैं। शिव-भक्ति का इनके जीवन में विशेष महत्व है। इनके खान-पान एवं जीवनशैली में प्रकृति की महत्वपूर्ण उपस्थिति देखने को मिलती है। गोरखपुर क्षेत्र में रहने की वजह से यहाँ की स्थानीय संस्कृति भी इनके जीवन में घुल- मिल गयी है तथा इस समुदाय के लोग भी यहाँ के अन्य लोगों की भांति तीज-त्योहार तथा अन्य परम्परायें आदि मानते हैं। यह समुदाय छठ पूजा जैसे महापर्व भी पारंपरिक तरीके से श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाता है। परिवार इस समुदाय के लिए प्रमुख इकाई है। पारिवारिक कार्यों जैसे शादी-विवाह, पूजा-पाठ आदि कार्यों में अथवा किसी भी महत्वपूर्ण निर्णय में परिवार की पूरी तरह से सहभागिता रहती है। विवाह जैसे पवित्र कार्य में परिवार अथवा समुदाय एकजुट होकर सम्मिलित होता है। कोई भी आपदा आने पर यह समुदाय साथ रहकर उसका सामना करता है तथा आपस में सहयोगी रहता है। इस समुदाय में सामाजिक एवं पारिवारिक एकता देखते ही बनती है।



बुढ़िया माता-वनटांगिया समुदाय के आस्था का केंद्र

अन्य जनजातीय समुदाय के तुलना में वनटांगिया के लोग वर्तमान समय की बात करें तो अन्य जन-जातियों से वनटांगिया के लोग बहुत अलग नहीं हैं क्योंकि शिक्षा की कमी, सामाजिक पिछड़ापन, आर्थिक असमानता आदि इनके जीवन में भी व्याप्त है। वन में लंबे समय तक रहने के कारण उन्हें स्वास्थ्य, रोजगार, आवास, शिक्षा आदि जैसी मूलभूत सुविधायें भी नहीं मिल पाई थीं। यद्यपि 2017 के बाद से इनके जीवन में बहुत से सुधार आए हैं। पक्के घर, पक्की सड़क, हर घर बिजली - पानी की उपलब्धता, स्वच्छता आदि से संबंधित सरकारी योजनाओं का लाभ इन्हें प्राप्त हुआ है। यह समुदाय वनों का निर्माण करता है तथा जीवों को धरती पर रहने योग्य वातावरण प्रदान करता है। इनके तीज-त्योहार, रहन-सहन, पहनावा, प्रकृति – प्रेम, भाषा इत्यादि एक सुगठित समुदाय का एहसास कराते हैं। वर्तमान में इस समुदाय की स्थानीय भाषा भोजपुरी तथा खड़ी हिन्दी है। यह समुदाय एक साथ रहकर सुख-दुख में साथ खड़े होकर, एकता की पहचान कराता है। इस प्रकार यह वन-वासी जाति भी अन्य जनजातियों से मिलती जुलती है तथा इनकी समस्याएं भी अन्य जनजातियों की भांति ही हैं।



क्षेत्र में प्राथमिक विधालय

वनटांगिया समुदाय की सांस्कृतिक विरासत

वनटांगिया समुदाय की सांस्कृतिक विरासत उनके रहन-सहन तथा उनकी पुरानी परंपराओं पर प्रकाश डालते हैं। इनके जीवन में परिवार, प्रकृति, और समुदाय का अत्यधिक महत्व है। इनके रीति-रीवाज, भाषा, गीत-संगीत अथवा नृत्य में उनकी संस्कृति साफ दिखाई देती है। समय के साथ-साथ इनके जीवन में भी बदलाव आए हैं लेकिन अभी भी वो अपनी पुरानी परम्पराओं को साथ ले कर चल रहे हैं। वर्तमान समय में ये लोग मटके तथा अन्य मिट्टी के बर्तन के साथ स्टील के बर्तनों का भी प्रयोग करते हैं तथा आधुनिक समाज के लोगों की तरह अपने घरों में टेलिविज़न तथा रिफ्रिजरेटर का प्रयोग भी करते हैं। मिट्टी के चूल्हे के साथ ही गैस-चूल्हे का भी प्रयोग करते हैं। शादी-विवाह इत्यादि के अवसर पर महिलायें अपने पारंपरिक मंगल – गीत गाती हैं तथा कन्या-दान, वरमाला, फेरे, विदाई इत्यादि रस्में निभाती हैं। नवजात शिशु के जन्म पर सोहर गीत गाना, नवरात्रि में माता दुर्गा की मूर्ति बैठाना, रोपनी (धान की सिंचाई) के दौरान गीत गाना, करवाचौथ, गणेश चौथ, मकर सक्रांति आदि जैसे पर्वों को रीति-रीवाज के साथ मनाना तथा अपनी परम्पराओं को साथ ले कर चलना इनकी विशेषता है। इस समुदाय के लोग केवल सुख में ही नहीं बल्कि दुख के समय में भी एक दूसरे के साथ मजबूती से खड़े रहते हैं। बड़ी से बड़ी परिस्थितियों का एक जुट होकर सामना करते हैं। वन और प्रकृति से लंबे समय तक जुड़े रहने के कारण प्रकृति का भी इनके जीवन पर अमिट प्रभाव है। ये लोग नीम, पीपल आदि पवित्र वृक्षों की पूजा करते हैं। इस प्रकार वनटांगिया समुदाय की सांस्कृतिक विरासत उनके इतिहास, परम्पराओं, प्रकृति, और पारंपरिक जीवन से जुड़ी हुई है।



वनटांगिया समुदाय का धार्मिक स्थल

वनटांगिया समुदाय में महिलाओं की स्थिति

वनटांगिया समुदाय में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे समस्त घरेलू जिम्मेदारियां संभालती हैं। घर के सदस्यों के लिए भोजन बनाना, बच्चों एवं बुजुर्गों की देखभाल, पालतू पशुओं की देखभाल, उन्हें जंगल में चराना तथा उनका दूध दुहना इत्यादि उनके प्रमुख कार्य हैं। गाय एवं बकरी पालन उनका मुख्य व्यवसाय है। ये महिलायें



वनटांगिया महिलाओं की दैनिक गतिविधियां

रेशम के कीड़ों को भी पालती हैं तथा रेशम उत्पादन तथा रेशम उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वनटांगिया समुदाय की महिलायें अत्यंत मेहनती होती हैं तथा अपने परिवार का आर्थिक सहयोग भी करती हैं। इन सबके बाद भी उनकी स्थिति अत्यंत संघर्षपूर्ण है और आज भी वहाँ की महिलाएँ पुरुष-प्रधान समाज की चुनौतियों और असमानताओं से जूझ रही हैं। ये महिलायें आज के युग में भी शिक्षा एवं आधुनिकता से दूर हैं। उन्हें आज भी जंगल के बाहर जाकर पढ़ाई करने की इजाजत नहीं है। जंगल के अंदर ही सरकार द्वारा स्थापित विद्यालयों में ये महिलायें



वनटांगिया महिला की आजीविका गतिविधि

प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करती हैं इसके बाद सिलायी – कढ़ाई इत्यादि सीखती हैं। विवाह के बाद ये सिलाई के माध्यम से भी आजीविका कमाती हैं। कुछ महिलाएँ भुट्टा भुनकर अथवा गन्ने का रस बेचकर भी जीविकोपार्जन करती हैं। पौधशाला में विभिन्न प्रकार के पौधे विकसित कर के परिवार के भरण-पोषण में सहयोग प्रदान करती हैं। इस समुदाय की महिलाएँ घर के बुजुर्गों, बच्चों आदि की सेवा करना ही अपना पहला धर्म समझती हैं। आधुनिकता की ओर कदम बढ़ाने के बावजूद भी उनके समाज में दहेज प्रथा समाप्त नहीं हुई है। आज भी वहाँ दहेज लेने अथवा देने की परंपरा चल रही है। 'समूह सखी' के द्वारा वनटांगिया महिलाएँ अब बैंकों से जुड़ रही हैं, लोन ले रही हैं, और छोटे व्यापार शुरू कर रही हैं इससे वो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। वहाँ की महिलाएँ आज भी अपनी परंपराओं को ले कर चल रही हैं तथा अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज एवं तीज-त्योहार को विधि-विधान से निभा रही हैं। वनटांगिया समुदाय में महिलाओं की स्थिति जानने के लिए हम लोग गोरखपुर क्षेत्र के तिरकोनिया नंबर 3 गए तथा वहाँ कुछ महिलाओं से बात-चीत करके उनके दैनिक जीवन, रोजगार तथा परिवार से जुड़ी परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया। बातचीत में ये बातें सामने आईं कि उनके जीवन में घरेलू जिम्मेदारियों के साथ-साथ अनेक समस्याएँ भी हैं। वहाँ की ही एक महिला संध्या जी कहती हैं कि “उनका पति शराब का सेवन करता है जिससे उन्हें घर में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। घर के पुरुष सदस्य उन्हें जंगल की सीमा के बाहर जाकर रोजगार करने की अनुमति नहीं देते हैं।” इससे यह पता चलता है कि उनकी आर्थिक गतिविधियाँ गाँव और गाँव से संबंधित कार्यों तक ही सीमित हैं।

समुदाय में वनवासी पुरुषों की भूमिका

वनटांगिया समुदाय में पुरुषों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। परिवार और समाज में ये केन्द्रीय भूमिका निभाते हैं। परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियाँ अधिकतर पुरुषों पर ही रहती हैं चाहे हम पहले के समय की बात करें अथवा वर्तमान समय की। पुरुष सदस्य पहले पेड़ों की पत्तियों और लकड़ियों को बेचकर अपने परिवार का पालन – पोषण करते थे तथा वर्तमान समय में ये लोग मजदूरी, पशु-पालन, जंगल से जुड़े छोटे-मोटे काम, छोटे व्यवसाय, नौकरियाँ आदि कर के अपने और अपने परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। वर्तमान में ये लोग अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करा रहे हैं। घर के नेतृत्वकर्ता होने के नाते घर की आर्थिक स्थिति को संभालते हुए ये अन्य पारिवारिक और सामाजिक कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। घर के मामले में किसी भी बड़े फैसले में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस प्रकार वनटांगिया समुदाय एक पुरुष प्रधान समुदाय है और उनके समाज में पुरुषों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।



वनटांगिया पुरुष की आजीविका गतिविधि

वनटांगिया समुदाय के उत्थान के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयास

अंग्रेजों ने वनटांगिया समुदाय को जंगल में साखू के पेड़ लगाने को बुलाया था और जब जंगल पूर्ण रूप से साखू के पेड़ से घिर गए तब वन विभाग ने उन्हें जंगल छोड़ कर जाने का आदेश दे दिया। उस समुदाय के पास ना ही रहने को घर था ना ही



वनटांगिया क्षेत्र में आंगनवाड़ी केंद्र

अपनी कोई जमीन। 6 जुलाई 1985 को वन-विभाग के लोग जंगल के तीनकोनिया नंबर 3 में पहुंच गये और उन्हें जंगल से निकालने के लिए जोर जबरदस्ती तथा फ़ाईरिंग करने लगे। जब वनटांगिया समुदाय ने वन से निकलने के लिए मना कर दिया तब वन-विभाग ने शक्ति का प्रयोग किया और ये समस्याएँ काफी लंबे समय तक चलती रहीं। 1998 में गोरखनाथ मंदिर के पीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी सांसद बने और उन्होंने इस समुदाय की ओर ध्यान दिया। योगी जी ने उनके विकास के लिए पहल की साथ ही उनको घर, बिजली, पीने योग्य पानी तथा बहुत सी सरकारी योजनाओं के माध्यम से मदद देने का वादा किया। उन्होंने वनटांगिया समुदाय के अधिकार के लिए काफी लड़ाईयाँ लड़ी। अपने सांसद के कार्यकाल के दौरान उन्होंने 2007-2008 में 'वन अधिकार संशोधन अधिनियम' पास कराया लेकिन वास्तविक तौर पर यह अधिनियम उनके मुख्यमंत्री बनने के बाद ही लागू हो सका। सन् 2017 में जब उनका चयन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के पद के लिए हुआ तब उन्होंने पहले ही साल वनटांगिया गाँव को राजस्व ग्राम का दर्जा दिलाया जिसमें पूरे 23 गाँव शामिल किए गये। वर्तमान समय में इनके पास पक्के घर, रोजगार, बिजली, पीने योग्य जल, विद्यालय, स्वच्छता आदि से सम्बन्धित सरकारी योजनाएँ एवं सुविधाएँ उपलब्ध है। महंत योगी आदित्यनाथ जी अपने सांसद के कार्यकाल से लेकर मुख्यमंत्री बनने तक के सफर में उस समुदाय के साथ खड़े रहे और दीपावली जैसा बड़ा त्योहार उनके साथ मनाते चले आ रहे हैं। ये परंपरा अभी तक चल रही है। इस समुदाय को अन्य नागरिकों की तरह सबके बराबर स्थान दिया गया जैसे इन्हें राशन



वनटांगिया क्षेत्र में पेयजल की सुविधा

कार्ड, वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन आदि की सुविधायें दी गईं तथा इनको मतदान करने का अवसर भी प्रदान किया गया। वर्तमान में ये लोग अपने इच्छानुसार अपना नेता चुन सकते हैं तथा स्वयं भी राजनीति में प्रवेश कर सकते हैं। अब ये स्वयं एक उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ सकते हैं। ऐसे अनेक अवसर एवं सुविधाएँ माननीय मुख्यमंत्री महंत योगी श्री आदित्यनाथ जी द्वारा उपलब्ध कराये गये हैं और उन्हें एक सम्मानित नागरिक का दर्जा दिया गया है।

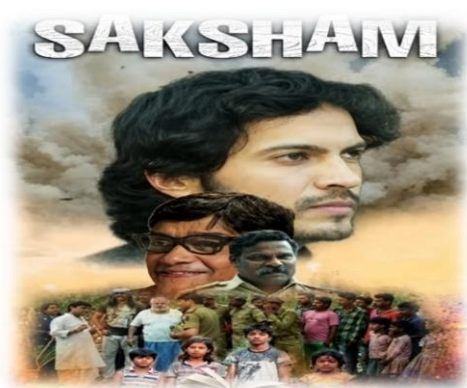
वुड (जंगल) से बॉलीवुड तक का सफर :

वनटांगिया समुदाय अब केवल जंगल तक ही सीमित नहीं रहा। समय के परिवर्तन के साथ वनटांगिया समुदाय के छोटे-छोटे गाँवों ने सिनेमा जगत को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। अनेक फिल्म-निर्माताओं ने वनटांगिया समुदाय पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फिल्में बनायीं हैं जिनमें उनकी जीवन शैली को दिखाया गया है साथ ही उनके जीवन में व्याप्त कठिनाइयों का भी चित्रण किया गया है। उनके समाज में समय के साथ-साथ अनेकों बुराइयों ने भी प्रवेश कर लिया है जिसमें शराब के नशे की लत मुख्य है। शिक्षा, विकास, महिलाओं की स्थिति, बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उनकी भूमिका इत्यादि जैसे संवेदनशील विषयों पर फिल्म-निर्माताओं ने विविध चलचित्रों का निर्माण किया है। इन फिल्मों में से एक फिल्म है - *Echoes Of The Forest*। यह एक 6 मिनट 24 सेकंड की लघु डॉक्यूमेंट्री है जिसके निर्देशक “आशीष कुमार पांडे” और निर्माता “अभिनव जेरेथ” हैं। यह डॉक्यूमेंट्री वनटांगिया समुदाय के इतिहास, उनके संघर्ष, जंगल से उनके जुड़ाव, स्वास्थ्य आदि उनकी बुनियादी जरूरतों तथा प्राथमिक सुविधाओं की कमी को दिखाती है। अपनी पहचान एवं अधिकारों के लिए उनके संघर्ष को दिखाती है। यह फिल्म सिर्फ उनके जीवन की कठिनाइयों को ही नहीं बल्कि उनके निराकरण के लिए सरकार के द्वारा किए गये प्रयासों को भी दर्शाती है। इस डॉक्यूमेंट्री में दिखाया गया है कि किस प्रकार उनके जीवन में समय के साथ लगातार बदलाव आ रहे हैं तथा इन परिवर्तनों एवं परेशानियों के बाद भी ये लोग किस प्रकार अपनी पहचान को बचाए रखे हैं। इन तथ्यों को बड़ी खूबसूरती के साथ इस डॉक्यूमेंट्री में दिखाया गया है। यह डॉक्यूमेंट्री हिन्दी और भोजपुरी भाषा में है। इस डॉक्यूमेंट्री को ‘नेशनल आर्ट फिल्म फेस्टिवल’ में ‘बेस्ट डॉक्यूमेंट्री फिल्म’ के पुरस्कार से नवाजा गया है।



‘Echoes of the Forest’ डॉक्यूमेंट्री का पोस्टर

सक्षम एक अन्य फिल्म है जो कि वनटांगिया समुदाय पर आधारित है। इसके निर्देशक तथा निर्माता शुभांशु सत्यदेव हैं और इसका निर्माण सत्या एंटरटेनमेंट, गोरखपुर द्वारा किया गया है। इस फिल्म की 90% शूटिंग वनटांगिया गाँव में की गई है तथा इस फिल्म को जागरण फिल्म फेस्टिवल 2025 के गोरखपुर अध्याय में दिखाया गया है। फिल्म में मुख्य भूमिका में मशहूर अभिनेता नसीरुद्दीन शाह की बेटी हिबा शाह हैं। अन्य किरदारों की भूमिका में रंजीत बेदी, रायों एस. बखीरता, बृजेन्द्र काला, कमलेश सावंत, ओंकार दास मणिकपुरी दिखाई देते हैं। यह फिल्म चार बच्चों के जीवन पर आधारित है जिनके नाम हैं - राजू, केटली, बटली और कचरी। ये बच्चे कचरा बीनने का काम करते हैं। गरीबी तथा घर की



‘सक्षम’ फिल्म का पोस्टर

परिस्थितियों की वजह से ये स्कूल जाने में असमर्थ हैं। यह फिल्म स्कूल जाने के लिए उनके संघर्षों को दिखाती है तथा इसमें गरीबी, शिक्षा पाने के लिए बच्चों का संघर्ष, बालश्रम एवं सामाजिक उपेक्षा को दर्शाया गया है। शुभांशु सत्यदेव जी ने मदन मोहन



मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर में 11 जून 2025 को सतत विकास लक्ष्य- 2 'जीरो हंगर' के संदर्भ में विशेष व्याख्यान दिया और उन्होंने विशेष रूप से इन बातों पर जोर दिया कि इंसान को केवल भोजन उपलब्ध कराने तक ही सीमित नहीं रखना है बल्कि यह भी जरूरी है की प्रत्येक इंसान को पर्याप्त पौष्टिक आहार और स्वस्थ जीवन जीने के लिए पर्याप्त सुविधाएं मिल सकें। जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित समुदाय को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना आवश्यक है।

जागरण फिल्म फेस्टिवल 2025 में सक्षम सिनेमा लांच किया गया। उस मौके पर गोरखपुर के सांसद रवि किशन, मेयर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव, डीडीयू की कुलपति डॉ पूनम टंडन एवं अन्य गणमान्य जन उपस्थित थे तथा उन्होंने दीप प्रज्वलित कर सिनेमा के सफल होने की कामना की। रवि किशन जी ने फिल्म के सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं। सक्षम सिनेमा का कान्स फिल्म फेस्टिवल के लिए चयन किया गया। इस फिल्म के कान्स फेस्टिवल में चयन पर रवि किशन ने कहा कि 'ये गोरखपुर के लिए बहुत ही गौरव की बात है कि इस फिल्म को विदेश तक देखा गया'। उन्होंने गर्व महसूस करके बोला कि हम इसी प्रकार गोरखपुर का नाम रोशन करते रहेंगे जिससे देश-विदेश में गोरखपुर का नाम हो। डी डी यू की पूर्व कुलपति महोदया डॉ पूनम टंडन ने भी सिनेमा की सफलता के लिए कामना की और उन्होंने कहा कि 'यह फिल्म केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं है बल्कि यह स्थानीय समाज, क्षेत्र और प्रतिभाओं को सामने लाने का माध्यम है'। निर्देशक शुभांशु सत्यदेव ने सिनेमा के बारे में बताते हुए ये कहा कि इस फिल्म की 90% शूटिंग वनटांगिया गाँव, गोरखपुर में हुई है और इसमें 150 से ज्यादा स्थानीय कलाकारों को काम करने का अवसर मिला है। साथ ही बॉलीवुड के मशहूर कलाकार नसरुद्दीन शाह ने भी इसमें कार्य किया है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार वनटांगिया समुदाय का इतिहास बहुत ही संघर्ष पूर्ण रहा है। यह समुदाय लंबे समय तक मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहा तथा इसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। औपनिवेशिक काल से जंगलों को उसका प्राकृतिक रूप दिया और हमेशा प्रकृति से जुड़कर वनों को संजो कर रखा पर स्वयं मूलभूत सुविधाओं से लंबे समय तक वंचित रहे। योगी जी के गोद लेने से पहले यह समुदाय हर कदम पर अनेकों परेशानियों का सामना करता था परंतु वर्तमान समय में सरकारी प्रयासों द्वारा इनकी स्थिति में काफी सुधार आया है तथा वनटांगिया समुदाय विकास की मुख्य धार से जुड़ चुका है। आधुनिक शिक्षा, रोजगार, तकनीकी तथा समान अवसर की उपलब्धता ने उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा किए हैं। वर्तमान समय में वनटांगिया समुदाय के पास अब खुद की पहचान है तथा सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस समुदाय को वर्तमान समय में एक पिछड़े या वंचित समुदाय के नजरिए से देखना गलत होगा। इनका यह बदला हुआ स्वरूप इनके संघर्ष, आत्मसम्मान, सांस्कृतिक विरासत और समय के साथ स्वयं को ढालने की झमता का प्रमाण है। वनटांगिया समुदाय पर जो सिनेमा अथवा डाक्यूमेंट्री बनायी गई हैं वे उनके जीवन, संघर्ष, और सामाजिक परिवर्तन को दिखाने का एक अच्छा माध्यम है।



प्रस्तुत आलेख से संबंधित सभी छाया-चित्र शोधकर्ता द्वारा क्षेत्रीय अध्ययन एवं शोध भ्रमण के दौरान लिए गये हैं।
सक्षम सिने पोस्टर सक्षम सिनेमा के डायरेक्टर शुभांशु सत्यदेव के माध्यम से संकलित किया गया है।



अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348-2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 04, (Oct-Dec 2026)

संदर्भ-सूची

“वनटांगिया समुदाय” सर्वहितकारी सेवाश्रम, SHSA, <https://shsaindia.org/vantangiya-2/>

“गोरखपुर जिले का ऐसा गाँव जहाँ का हर दीप महंत श्री योगी आदित्यनाथ के नाम से जलता है” ईटीवी भारत, 3 नवंबर 2021, <https://www.etvbharat.com/hindi/uttar-pradesh/state/gorakhpur/vantangiya-villagers-celebrate-diwali-on-the-name-of-cm-yogi-adityanath-in-gorakhpur/up20211103140121572>

पांडे, आशीष कुमार, निर्देशक । वनटांगिया- Echoes of the forest. Filmfreeway, 29 दिसम्बर 2024 <https://filmfreeway.com/VANTANGIYA-ECHOESOFTHETHEFOREST>

“प्रदेश का पहला जल अर्पण गांव बना वनटांगिया”, दैनिक भास्कर, <https://www.bhaskar.com/local/uttar-pradesh/gorakhpur/news/vantangiya-village-became-the-first-water-offering-village-in-the-state-136773585.html>

“जिले में बनी सक्षम फिल्म का ट्रेलर लॉन्च” हिंदुस्तान, 9 मई 2024, <https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/gorakhpur/story-the-trailer-of-saksham-film-made-in-the-district-was-launched-9955789.html>

“कौन हैं ये वनटांगिया जिनके लिए सपा-कांग्रेस की सत्ता से टकराए योगी और 100 साल बाद दिलाई ‘आजादी’?” यूट्यूब, NMF न्यूज, 2026, <https://youtu.be/CJDCOW2BoYw?si=dCkIYMOFC15xqLDs>

सिंह, सुधीर नारायण । “जागरण फिल्म फेस्टिवल 2025 गोरखपुर...सक्षम मूवी.” यूट्यूब, <https://youtu.be/AF5NmOe41kw?si=haX2OuWocSXf2l6z>

सिंह, सुधीर नारायण। “SAKSHAM @ CANNES FILM FESTIVAL 2024” YOUTUBE” यूट्यूब, 2024, https://youtu.be/spzVYc-rA3o?si=tGs83pu_Xglbky8B

सिंह, सुधीर नारायण। “रवि किशन क्या बोले – लोकप्रिय लोकसभा सांसद गोरखपुर चुनाव नॉमिनेशन की पूर्व संध्या पर”। https://youtu.be/F_4B_Asg78Y?si=YREPuT9ZEgXh1Zkg

“नए साल पर वनटांगिया समुदाय के 18 गांवों को योगी ने घोषित किया राजस्व ग्राम” नवभारतटाइम्स, 1 जनवरी 2018, <https://navbharattimes.indiatimes.com/state/uttar-pradesh/gorakhpur/yogi-declares-18-villages-of-vantangiya-community-revenue-village/articleshow/62326498.cms>